

ans herm

প্রকাশক ও মূরক—শ্রীকালীকিকর নিজ ইতিয়ান প্রেশ লিমিটেড এলাহাবার

बुना >- पथ ठीका



MAZELLE GAR.

ক্যাজ্য প্রকৃতি প্র ছিট্টিক জ্যাজ্য প্রকৃতি ক্যাজ্য স্থাজ্য সম্প্রকৃতি

प्रिकेशन क्षित्र निर्माहेक अन्तर्गकार्य १००१

শুদ্ধিপত্ৰ

ঋতুসংহার

বিত্রেদেশ—শভূসংহার লেখার কালে গুরুতর সরকারী কাজে লিগু থাকার কিছু ক্রটী রয়ে গেছে। এখন যে ক'টি প্রমাদ চোখে পড়ল শুদ্ধি-পত্রে ধরে দিলাম। সুখীপাঠক অমুগ্রহ পূর্ববক ক্রটী মার্জনা করবেন।—গ্রন্থকার

পৃষ্ঠা	পংক্তি	পণ্ডন	34
5	22	রক্মারি	বিচিত্র
8	8	নিতেছে	नरेएटए
৯	&	ভূষা য়	তৃ ষ্ণায়
>	>•	শস্ত অঙ্কুর	শস্থাস্কুর
۵	5 6	निर्माघ राज	निर्माध (य वरन !
2.	8	শ্রান্তি ভরি	শ্রান্তিতে ভরি
50	>2	ধরিয়াছে	ভরিয়াছে
\$8	ર	দীপ্তি তারি	দীপ্তিতে তারি
28	24	বিধিছে	বিধিছে
59	> © 🛔	গভিটি	গভিত্তে
72	24	বহিয়া	ৰহিয়া
25	5•	কুন্থম	ফুল
२ •	>	ইন্দ্রধনু রঙে	রামধন্ম রঙে
२०	٥٠	छनिया नाबी	শুনিয়া সে নারী
₹ 5	b	বয় জেগে	রয় জেগে
२ऽ	>6	অধবের	ব্যধরের
२७	56	পানন্দে	স্থ খেতে
9.	28	হংস মধুর	হংস স্থমধুর
•	20	मत्नित्र वीिं	क्रमस्त्रत्र श्रीिं
৩২	7.	रत्रा य	स्त्रत्य

ने क्।	পক্তিং	অশুদ্ধ	જ
6 5	>>	অনুপম রুচি	ৰুচি অন্যুপম
9 9	2.	হুনাত	ছাতি
90	58	লোচন	লোচনের
99	8	হইয়া	শ্রৎ
82	>>	শীতল পরশ	শীতল-পরশ
8२	8	নিরিখটি	নিরিখেরে
89	>•	রাথিয়াছে তারে	রাখিয়াছে ধরি
80	>>	অলসের ভারে	অলসেতে ভরি
88	•	মস্ভোষ	সন্তোষ
84	8	কবে	করে
86	>>	না বয়	না রয়
4.	æ	বাবুল	রাত্ <i>ল</i>
es.	۵	রাপীর	বাপীর
aa	٠	ধরে ছে	ধরে
aa	•	রমণীর	রমণী
er-	2	যাইছে বয়ে	যাইতে ছে ব'য়ে
••	ર	क्षय (पाटन	क्रमग्रिट (मार्टन
_	-		

स्मान्तः असूत्। स्मान्यः प्रदान्यमात्रा भिन सन्धः घरायत्त्रं स्मान्यः असूत्।

বশু

अधाव बारे जिल सवि अभका क्राक्र गर क्षिक हर्ष प्रात्म 54 विस व्य वाकता-अमर्वाम (राष्ट्र क्रिन् मेर्द (अस्तर्वे, विकर-क्रमहर्ग-गिराने वार कार्या देखारी रीत- जिल्ला- जिल्ला कर् भ्राम वृश्चिम अपनि किए ? अमिरा कार रहेड अमिर ग्राम अन- व्यर्गाल द्रुकार अराजा अयात अराजा

٤

ष्ट्रजा वित्रकारित धित (सर्कार होर महिला अपन कार्य अध्याद्ध नाम माम श्रीतः आरहित सारक सारित मारी-मिर्यात्म अर्ड आन्यान्य, 3474 NAVE-PREVENCE CALM WILL BINGARAS वैद्य व्यड (सर-या)-मेर् रामा या नियान नियान विल्य प्राप्त निर्मार्थिक नेकर अर्थे कार्य तर्दा मारे व्याप्त अवार, विकार (उपनार कार्या कर्या स्थान हर्य-124899- 2542 13- WIN नित्र कार्या आर्थान मार्थान! हेश निक्त करा मही प्रमुख एत्मिरिक, ल्यामिक भार

9

क्राक् क्राक् कार्य क्राय क्राय-אנותב פלבותני דיניה היונה (म अध्य अस्तिया (सत्त्र अस्य क्राह् क्रान क्राल (कार ग्राह नार्य महत्व वर्ष क्राया का स्थापत का स्थाप chestras sis mountal-- ופיצי התונגליאל פאל क्तिए किंड अधार जायान! क्रमार्ड कर स्राम्या उत्तरीय उत्तर माडि गरें-विकेटिन दिए 55 कर्ष (47र्थ , इन्द्रम श्रीव काएन मरे! DIANA SUND SAMMAR (دعود رسه معرود المعمد) LUSAN DERLAND WALLES & MINERAL PARANA दर्भ अर्थ के अर्थ हिंदी । कार राज्य हिंदि के अर्थ हिंदी अरापर अरखराट्य अरार्स क्षेत्रास्थ क्षेत्रास्थ क्षेत्राच हुनी

निक्यन

, मारे अप. धार्य , ब्राकी भाष- राताक-सार्य द्रावेश कारकार क्यान्यामक --अम्बर्ग अम्बर भारत है अन्यहं - कर्षा के मार्थ अवस्य कार्या कार्या १३. द्राया ज्ञानमास्य १-१५ कार्येष द्वात मानार् नामित्र के प्रकार मार्थित करामित्र वरमारा अक्राने - दिना रामडामानी 3 किस्सिक जिल्ला व्यक्तार कार्य प्रकार ज्यान कार्य मान्य । क्राक्टि भूका अभे १३ (यर का का का रहा का अधि में अधि है। कें। ध्रम् होत महाकुक काकुक्क नाम अध्यक्षर कांच्या उ द्वारा मान क्षा यक्षत प्रमुद्ध क्षाय क्षाया अर्थित र प्रमुक्त रेग हिस्तिर राजेश्री

CYMMIZE !

किं अ क्रिकी एक कार्र-रंग The BEAR 1 202 266 12 16 73-672CL WAR AL TO TO 424 अराक त्या के का का का का का का का अकाला कारा-मार्काक्य-मार्का व्याजाकार क्राव्य अक्रार । क्राये 3 -क्रिकारिक स्मार्थ- राम पर-अन्ध्रिक STORTHE S (M) 421. STORE OTHER SA अधिक दक्षित्ता हिरा । अत्यक्ष अवस्था were shot 3th swist an. उद्द - 3 व्यान अम्मा क्रिक किया कार सिङ १४, ७४मि क्रिक ३३व मिन्द्र का हा मार्थ मार्थ मार्थ है मार्थ क्षिक मिलाइ तथा प्रथा हात । या मान ENSIN 3 M. WING CELL DN. WELLEN डमी-उंक निकारिये किला मान: BYELLED- STER BUT BLER 189 BALL

मार्क क्रिया मिक्राया के किया किरिया 32 - KLANI (BALY OVENS END the service or rethe- } and THE SAME SOLD COLOR SAME AND क्रावार केरा उ मार्च क्रिकार हे मह हिलात 12/2018 616 - 52 - 925 ELLENE राश्त मन्द्र । यह अध्य कार्यह रायक्ष राम ३ वर्यन्त्रमाक यन विश्वित क्राध्य कार्य कियो किया माम्डाम्ड राउ त्याक-हार राजा क्राह्म । क्राह्म स्ति। पर क्राह्म 2/2025 TOF 02 - 700 2003, 2494 अभागे अस्टा हिए उते कारे भी-- Conse prises - mer-paris envertants कार्यक ३ किएमी व्यव सत्म मुख्य appeared 3 NESTANICANI अरे-अश्विड कर मिल्मी उ करका कार्य

मारे क्यान क्यान

कारें अर हात हात है। ALURIA PARISIAN KE A SUSIEM or som frago orang 372 23ang In / sweetord (intuition) रिया अमीक कार्म अप्रकारी (sensation) pres of sport of convers (design so) ores; expres (hypothesis) reser Bis 40/ science 20) MAS- (BENT NASTES (teching) रिरिका रिर्धिक रिरिक प्रथित रिरिक्ष रिरिक्ष द्यायकोम् एक प्रमानिय अभिक्राय Les any serie sur sulle mis -1 33 ort 218 (feeling 22) 222 राज्यान १ ह हरक किया माना व्यक्ति के देश द्यार व्यक्ति वर्ष

महामा निकास मान्य में का महामा में का महामा । स्मा प्रमान का निकास के निकास कि नि

राराट अमेरनेयम-। कार्यमां के कार्य कार्य कार्यकार कार्य

or on the spicialy a seed than क्षित्रकार क्षेत्रहार क्षेत्रकार का स्थ minne & & & stan 1800 Elver Harren svice 1 assistants wo meeter with the walls for Litter ing is a serveron fuller मिकियाक प्रकार क्राका मिक्कि ब्रास mess extres to 1 Divis sees exellerence esours, phosper नेत्यत्व के कार्य के प्रवास्त्र करिय sous-sara sign monson छनी अलाक्ष्य निकार अनार र'न। सर्वाहर (रारास्टाउर व्याप्ताना

करवेस । क्रोन्ड दः क्ष्यं क्ष्यं का शिनुकारं २४.६४०१९ चे ३ लस्थार- क्षवेद्ध द्रुक्तारः पर्वेक्स भरत अस स्टब्स-स्ट्रास्ट्रेस् १५५८ स्थित स्थारं भर्ने-हर्त्य

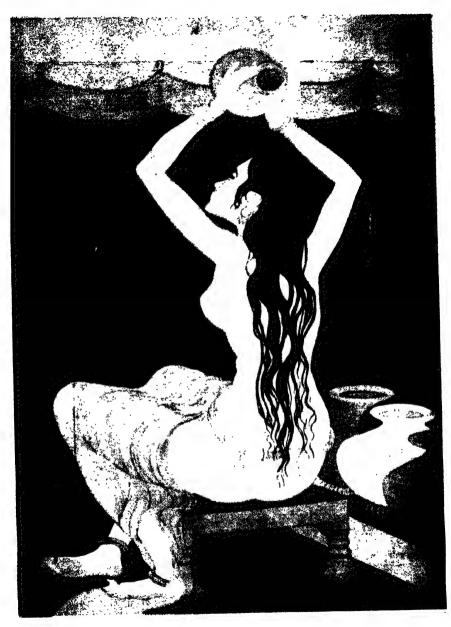
र्यामा नार ,- जर जान कार नि जिया के कि के कि के कि के कि कि कि कि दिरमा करा करा भारत पर भारत पार्य भारत क्षिहारे के म्यानिक करिया कराति है। लाम मिरिए हर कर कर कार मारिक THURS OND Sheet BLE LENGER Malerical x ales sers - Eres of 120 . LEFT 11-01 Secure prosess in En elle राराका के अही कार के प्राप्त हैं WALTER ELESS - WE ENERS servision order misiance sol उत्तर विक्र कर्त करमार् तिथे and sugar seal and 322 When eleven refler rows ENTER- 25-NON I RENERO BROWN TETESTA GENERO CONSTRUE MEETES was recover sent els suis 20-435/11

voleines mo-arreverse ANJWISKED SELLEN SONSING 24-Jaco- Mer Diese - Mes dies 5. 24 24EN 12 EAK . LE CARE गिर्ड द्राय कार हिंग कार हिंग निर्धातां रास्ति। त्या रिकाम हिल्ल

न्त्रक हराष्ट्राहर करा।

Mars in Brus Surver want whom 15acsmoss

कि द्वा



গ্রাম-শতসংহার পঃ ১:

क्राउँ भर ड्राय<u>्</u>

. यीका वप्प अक्रम मथ्

तथा किला वर्षे , गिर्मिश वर्षे के कार्या के अग्रिस क्षेत्र कार्य के अग्रिस वर्षे , गिर्मिश वर्षे के व

न्यस्य सकाम कार्य अभिन्। 5 न्यस्य भ्रियम भ्रियम भ्रियम भ्रियम न्यस्य व्यक्तकाम अर्थने कार्य सम्यम्न अर्थने भ्रियम प्रदेश होत्याव सिल्ल्ले

्या करिक में मही के मां हु की । व क्षा करिक में मही के पाह है। क्षा करिक में मही के पाह है। क्षी - भी किसे मंश्री के अराभ के सर्वे - में हैर परित ही म्याह कु किंग के किया कर्म के में मार्थ के किया के अराभ के किया किया के पार्थ के किया के किया के

स्थानातः संज्ञाने स्थान वार । इक्नान्त्राम राम्य कार्यान्त्रे विश्व स्थानातः संज्ञा वसन । स्थाना-०

OFF THE

क्रामुम्यां कर्त कालमा ईबंप्-! ह भुमाराव आक्र क्रामुम् अभाग काल क्रामुम् स्यान्म '-भुमाने

अस्म देम माम निर्म करा असी-विक्रिति माल राम रा क्यानी-विक्रिति स्थान निर्म स्थान विक्रिति स्थान निर्माण

्रीम्मान । जिल्ले જેંગ- ક્રમાયાં માટ કામ કેલ્ય ક્રોમાં જે જે માર કેલ્ય કાર્ક જાત કર્માં જે જ

अभग अक्ष्या मार्गिकार ग्राफ । वह वाम मंग्री अभग व्राकुर्ग काण केंग्र- अभाषां ११०- वैदिन काम्न

भित्र- अभित्र क्षेत्र क्षेत्र । म्यान अभित्र अभित्र क्ष्या क्षेत्र । म्यान क्ष्या क्ष्या । म्यान क्ष्या क्ष्या । म्यान क्ष्या व्यान । म्यान क्ष्या क्ष्या । म्यान क्ष्या ।

સ સ્માત સ્માત્મ સર્ક કરાની શિયા કર્યા કર્યા છે. આ કર્યા કરા કર્યા કર્ય ज्याम अर्थ कार्य सकेमके शर्र 170 विग्रंथ-विश्वेदीय सम्याम-म्राप मग्री--अने काम्याम् मही- ? अम्रो बार्ग द्रेशके र्युष्म भ्रामान्यर्ये

હોસ હ્યામાર હ્યાફ સ્પાફ અમો? શ હોસ હ્યામાર સ્ટ્રોમારી- અમે સમ્માલ હામ - હમાન્ય. સલિયાર ક્યાં : સંધુષ્ટિક્સ ફિર્મ ' છામ આપ્ય હિર્મ સમાલ ભારામ સફ્રિક મુક્રમ-સમાલ મહાર એક ' હેલાલે શ્રાલેનું-સ્ર ક્ષમ અલાર અમુર ક્ષાલેનું-

આશુ- ક્યા જેડાકુન સંતમ, આત્મ ક્યારે દ્યા પ્રશાસ ક્યાર આશ્ચ- ક્યારે સ્થા પ્રશાસ ક્યાર આશ્ચ- ક્યારે આંગા ક્યારાશક જાલ

QQ Name े भिरत क्रांचन सम्माद्ध (सार्ग हो) क उक्तम एउँ ध्री सम्भिश्ची का कु कु कु सर्व स्थाप को कु का कु (क्रांच्यः १) स्थारिक केन्यांग अभ्यापक के का कु

(क्रास्प्रसाक कार-निकार कार्याता; ३३ अर्थ- अमारिक्स- क्रियासिक आएक. स्रोप्य (त्रातान क्रियासिक आएक. श्रिप्य श्रीप्य में क्राइकि कार्यः के स्राप्ति भीकाम सम सम अमारिक का स्राप्ति भीकाम सम सम अमारिक का स्राप्ति अस्ति अस्ति के स्राप्ति अस्ति अस्ति के

स्थान हरकार का कारवंप-178 को स्थार करने क्यार प्रस्ति क्रिक्ट केत्रार क्षेत्र- अस्व - क्यारवंप - की स्थार केत्रार के का क्षेत्र- क्यारवंप - की स्थार के क्या - अस्थार का निवास के

સ્વિકાંમુંખ સંપત્ન (સાડ્રાંક ના કુલ્ફ.) ર ભ્યાસી ભ સેના કર્યાત કાર્યોટ લ સ્થિકલ્વ કૈયારે લેડ્ડનાલ સ્વારે. જ્યાં કાર્યોટ સ્પત્ર સંપત્ર કે જેટ-જે

करं प्यार क्यां स्वारम्थां ग्रेम क्यां अपर क्यां स्वारम्थां ग्रेम क्यां क्यां क्यां ग्रेम हा इति क्यां क्यां प्रमान क्यां ग्रेम हा क्यां क्यां भ्यां क्यां भ्यां क्यां भ्यां क्यां भ्यां क्यां क्यां भ्यां क्यां क्यां

करामान (ए उम्सा क्रमा निमान क्रमान (ए उम्मा क्रमान क्रमान

शिरश्य अद्राम श्रिक्त अभि । इस्म रंगार व्यक्त विकेश- क्रमार्गे निस्तक अस्त दत्त द्याक् ं रं विस्ताम स्त करके यो त्याके हिस्स निस्ता क्रमार्थ, मर्जेरक-ट्यां अस्ति नेर्यास स्वारंग्याम् विस्ते ' स्रीक्रमार्जे

હ્યા કુર્યા રાજ્ય જેટ્ટ કુર્યા હ્યા છે! 17 આકુ ક્રિક્સ કાર્ય કાર્ય આકુ કુર્યા ક્યા કે મહિલ્લો માર્ચ કુસ્સાને સ્ટેક્ (અતુમુત્રતમ ન્યાન ચ્રિક્ટ ઉત્સાનિક

માન વ્યસ્ત સ્તાન સાશ, સમસ્ક્રેલ્સ, 51 જ્યારે કર્ડા કર્મ કર્મ ઉપર્લી જ્યારામ ત્યારે કર્મા કર્મા આક્રુમ પ્રમાન પ્રાયમ કર્મા જ્યારે મુખ્ય સ્ત્રેમ સાશ માર્ચ પ્રમુજ્ય સામ માત માર્ચ અમિશ્ર સ્ત્રુમ માત્રુમ માર્ચ અમિશ્રુમ સ્ત્રુમ માત્રુમ સાશ્રુમ उर्जा 5,6 3) म जार्रायार वृद्ध 150 अर्थास्थ्रा सत्र स्ट्रांस स्ट्रांस ने अर्थास्थ्राय स्ट्रांस क्रांस्ट्रांस ने अर्थास्थ्राय स्ट्रांस मान्या स्ट्रांस्ट्रांस क्रांस्ट्रांस स्ट्रांस स्ट्रांस

शिकाम कत्ताम क्रांसम्भा क्रिकं १६ ग्रीकिय त्रिशं नाम क्रांगुट्टें ग्रांक्ति श्रांस क्रिमं द्रेशां ग्रांम स्मारक क्रांगुंग श्रांक ग्रांम स्मारक क्रांगुंग श्रांक श्रांम स्मारक क्रांगुंग श्रांक श्रांम स्मारक श्रांगुंग श्रांक श्रांम स्मार्थ क्रांगुंग स्मार्थ ग्रांम स्मार्थ क्रांगुंग स्मार्थ ग्रांम स्मार्थ क्रांगुंग स्मार्थ ग्रांम स्मार्थ क्रांगुंग स्मार्थ ग्रांम स्मार्थ क्रांगुंग स्मार्थ

March

भारता कार्य कार्य स्थान कार्य कार्य

उत्पाद्यकीय क्षण्य क्षण्याम विका क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या विका क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या विका क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या विका क्षण्या क्रण्या क्षण्या क्ष

Marsha svary



मुन्नेग्रह्म

अस्ति क्रां स्ट्राम स्ट्राम अस्ति । १ १ विक मान्या अस्ति स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम १ विक स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम १ विक स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम १ विक स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम १ विक स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम १ विक स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम स्ट्राम

ત્રિક્સામાસ ઉત્ત (ત્રહ્ય ક્રિયાનું) ? સસ્પ્રમાસ) - અડાંપાકુંક ભારું — ડ્ર કાર્કા ક્રમ (ત્રિયાને મુસિયાનું — ડ્ર જ્યાં ક્રમ (ત્રિયાને માર્કિયાનું — ડ્રેગ સ્પર્કેમ્પાનું

જારું છમ ૧૭. હામ માયમ કર્

उत्सान् भूषेता साराम आशार्ग । १ १९९८ विक्री अमर्गाय प्राथम व् कारत अपन-शुम्म अम्मान ने कार्न रमन-शुम्म अपमान ने

स्मान्त्र कार्य म्याना क्ष्य क्ष्य

बेंग्रेस स्मान क्रमान साराह साराह , रिक्ट्रिंस - क्रमान - स्मान - स्ट्रेस स्मान - स्ट्रिंस स्मान - स्ट्रेस स्मान - स्ट्रेस स्

्रिस् क्षेत्राह्म

त्यान्य क्षांस क्यांस क्यांस्ट्र स्ट्रास्ट्र क्यांस्ट्र त्यांस त्यांस स्ट्रास्ट्र त्यांस त्यांस स्ट्रास्ट्र त्यांस त्यांस स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र

रर्रासुनी-क्षिक्ष्य-स्ट्रास्तुक्ता । १४ अर्थक्षिय स्ट्रास्तु-अर्थक्ष्य स्ट्रास्ट्र अर्थक्षित सम्बेश हम्यूक्त्यायी-

क्रेड्ड क्रियं द्रियं श्रास्त

આખ્યતાણ ચેકાત પ્રદેશના ૧૪ અર્ચ-સમુક્રામ ક્રિકાઈલિયાષ્ટ્ર-જ શ્રુમાર્ક

विजेशियों नाथी-भागा भारतं हैं अनुल्लाम्यरं (भार नाशि वेद्दं (लाभ्य-हैं नीव्य शंक कावि के भाय-क्रियमा - विद्य - अवेदव के विजेशीय भिक्र-क्रियमां प्रदेश ! विजेशीय भिक्र-क्रियमां प्रदेश ! विजेशीय भिक्र-क्रियमां प्रदेश ! विजेशीय भागा अपूर्व शिक्ष ! क्रियमा अपूर्व काविश्व ! क्रियमा अपूर्व काविश्व ! ! ! ! !

कार्यपु- जित्त शिरा क्रांत क्रांत है। स्वास्त्र के क्रिंटिय याह्य है। स्वास्त्र के क्रिंटिय क्रांत एकपिए कि मेंका उस्तु चिर्गा ३७० भेष्य क्रिक मार्थ उद्यक्ति हिर्गा मेंब्रिक रूप्ट अभिन्द्र हर्गा-

१९७५ मास विकास काम! १८ इंड्रेस्स मार्थ (मार्थिस काम) भारते प्रमुख काम) भारत विदेश निक्तिस्त कार्ये

्योत्म अर्था मह मैश्रा आधा ; १६ ं श्रीत के क्रिया के क સ્થાના ક્ષેત્ર કર્મા :)? સ્થાના ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષેત્ર ક્ષ્ય મુખ્યુનુ ક્ષેત્રમાં (રાષ્ટ્રમાં ર્જ્ય ક્ષેત્રમાં શ્રામાં

अक्ष क्रम्मार रहत वा ना लाउ। अ अभ्रम्भ क्रीज्य सम्म्रों सम्म्र अभ्रम्भीज्य सम्म्रों सम्म्र

कामित्रक्त-त्य मीम कांग अग्नाम कामित्रकार भागमं स्वाम क्रियाक क्रम्योककार क्ष्रिया क्ष्रिया कार्य हिता क्रम्यां कुर्व क्ष्रिय हिता क्रम्यां कुर्व मीक्ष-तं न्या क्ष्रिया क्ष्रिया में मान्य क्ष्रियं क्ष्रामं नं क्ष्य स्थान्य क्ष्रियं क्षामं मंग्रमः હ્યામુગા- સમ ડાંમું હામા લકા; મન ડાક્ષ્યુ-' જાપું ક્રેસલ્પાક્ષ્યુન અ હાક્ષ્યું કેંમા- હાન સાન સાન મરે હાક્ષ્યું કેંમા- હાન સાન સાન મરે હાક્ષ્યું કહે. અને શિ

मकर्रा निकास के का भारत है। १० भूग्रित मान्य डाक्ष केंद्रेंट उक्ते म एक की- कक्षि शिक्षेत्रसाम के म निक्रिया है। का का का का का

લક્ષા: (ખાઇ અપણ એક એક કંકા છો. (સ). પ્ર. () ક્ર (પ્રક્રેપણમાં સ્પ થારે પ્ર કર્ય ક્રેપફેપીએ સ્પાર્ટીંગ્ર- (માર્સ ક્રિપફેપીએ સ્પાર્ટીંગ્ર- (માર્સ ક્રિપ્ત સ્પ્રાપ્ત સ્પાર્ટિંગ કર્ય સ્પાર્ટિંગ કાર્ડિંગ સ્પાર્ટિંગ સ્થાર્ટિંગ સુખ્ય ર્જેક્ષ્માં સામાર્ટિંગ કર્ય ક્રિપ્તાર્ટેં

ડાા સામુ પ્રમાન હાલુ હવે હમાલુ ; ?? ભ્રિક્ત મું કે જે બ ક્રામુન કા શુક્રાલા! મંછી કે સ્તર કાપાન હો શુનાન કામ સ્તર કરે અપ્રમાન શુના શુના કાન સ્પાન લે માતા (સ્તર કાર્ય કાર્ય સ્થિમ સ્પાન હતે હમાં હમાં શુક્રામાં સ્વ ક્રમ સં હમાં સ્વ વપ્ત હિ. ત્યર (સ્તર કાર્ય સ્વ - સ્તર સ્તર (સ્તર કાર્ય કાર્ય અડકાર હનામ શિયાણ ક્યા કા કહ્યા કહ્યા કર્યા કર્યા ક્યા ક્યા ક્યા કા કર્યા સ્વામ સામ કર્યા કરા કર્યા કર

કરાક હાન્ય સ્કૃષ્ટિક કર્યું ; 58 સ્વ સ્થિત સમ્મ સિસર્ હોલા . પ્ર રામ્મ સ્કૃષ્ટિમ સમસ્તા કર્યા . પ્ર મામ્ય સ્કૃષ્ટ સ્થિત સ્થિત સ્થિત . સ્કૃષ્ટ ક્ષ્માણ સ્થૃષ્ટ સમાત મામા સ્થૃષ્ટિનાર મ સામ્યું સમાત મામા શ્રુષ્ટિનાર મ સામ્યું સમાત મામા શ્રુષ્ટિનાર મ સામ્યું સમાત મામા શ્રુષ્ટ સામ મા JAMA

क्षिति क्षामस्म (व्हिर्श) सम्भूक्त क्षिति। क्षित्र क्षिति क्षिति क्षित्र क्षिति क्षित क्षिति क्षिति

અને આકુંગ્ર હિંગ ખાંદે આણે ! કન્ અન્તર સમ્બ સ્ક્રીશ્ય શામાર્ શ્રિક્ષાં શુકામ સામાર્ શ્રિક્ષાં શુકામ સામાર્થ અપનુ પ્ર ત્યાન માર્ચ માર્યા અપનુ પ્ર ત્યાન પ્ર શુકામાં શ્રેમ્પાં અર. ઉલ્લ. ધ્રમાં શ્રિક્ષા પ્રત્યા આ માર્ચ માર્ચ શ્રિક્ષાં

TUT SHIT SHATES



শরৎ—ঋতুদংহার পৃ: ২৫

अंद्रेश्य ज्ञीत्रम्

किमास क्रियाम टिक्ट इस हैं। अय-उ/स स्तुम्य क्रियं अय-उ/स स्तुम्य क्रियं अय-व्या स्रिक व्या क्रियं क्रियं अप क्रियं क्रियं अपरित्य स्रियं अप्रक श्रील अपरित्य स्रियं स्रियं

भन्नकर्ती-जर्भी द्वारा कर्ता क्रिया के स्ट्राम क्रिया के स्ट्राम क्रिया कर्ता कर्ता क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

क्षाराक क्षार

Best State white when sign seed to see the seed of the

स्वारकांत्रं सम द्रांत् कांत्रें । क् । इस्र आस्थास स्मारीम्य साम र इस्र प्रकाशक स्मारीक कांत्र इस्र प्रकाशक साम श्रीक कां इस्र प्रकाशक साम श्रीक कांत्र । की હેલિસિક-(૧૫૬-183 વ્રમ્પક ; -- 34 હેપ્સમુક ન્હેલે ક્રુક્સુ-કુલિક. - 30 શિસ્ત્રામુ ન્હેલે ક્રુક્સુ-કુલિક. - 30 શિસ્ત્રામુ ન્હુલે શુક્સન ભાવાનું પ્રસાલક સ્મૃત્ય જે જાત કર્ય -- 3 શ્રાહ્મુન્ટ

હિલ્લામાં આ માળ સાલ સહ્ને મૃં છે હ હ ગાડન હ્રાલ્મલે ક્રાને સાલ છે હતુ ન ડામાં આ સ્વે શોજા મુખ્યન્ન નુ ક્રો ક્રિકે પ્યાસ્ત હાલું (ક્રામ જેવા: અને મૃતિને સ્વા ભાગ માલું મહ્યુ માલે નુ ક્રો ક્રો ભાવે ક્રાફેલ મારે નુ શ્રી માં મહ્યુ માલે મુજા જાલ્મનું

ज्रुंश (अयव ये क्षित्रं खुरुक्त' —) भारत हैंदेर अक्ष्य दुरुक्त कार् अक्ष्य हैंदेर अक्षय दुरुक्त कार्य अक्ष्यक क्ष्यं मेर्ग्य स्वीवंत्रेय

तेराकां सम कांग्रिक अशुवं ; २०१० निक्षत्र- प्रकारण सक्तम् (यास्त २० प्रण- प्रकारण (यो आंग्रुक् ; मु रूस क्रमण संस्थुक व्रक्ष- ग्रु श्रिम्प्रक क्रम्ब अंशि आंग्रेज्ञ रेट्यामान प्रकार्व प्रकार क्रम्ब रेट्यामान प्रकार हार्यास्य क्रमं नु स्थाप असम्ब व्रक्षिण (अद्ञु જ્યુલ્લમ-તેમ દ્રાખુ લેમ એપણં, » જ્યુલ્લમ-ત્રેમ દ્રાખુ લેમ એપણં, » ઉપ્ત ક્રુલ્લમ્સ એક્યુક હ્યુલ્સ ત્રામુક ઉપ્યુક્ષિય સલાક શામ છે અમ્મ સ્ત્રુપ સલામ સામાન કર્યા ક્રિયા સ્ત્રુપ સ્ત્રુપ સામાન કર્યા અમે- રિલ સ્થ્રુપ માના મામ

क्रिक्स अफ्रक्स करि क्याका ?! १ क्याक्ष क्रिक्स क्रिक

अख्यात क्रायन स्मिन क्रीयहों। ज्यान-क्राडाक के अल्यान के विदे डि.स. क्राया के प्राडा के अल्यान के विदे सम्म र्जा-बारड़ सर्ग के कि स्रक्रामुक्ति लग्नि स्टेस्ट ग्रांचे १० कांगुर भेरेन्- सन्त्रिस्त्री-जार्षेस् अस्य क्षित्रस्यं नेमडे इस्ट्रिंस एस्ट्रिंड प्रात्निका इस्ट्रिंस

ગશ્ય હિલ્લા અંહલ સવાવં; સ્પાકાંત સંત્રા ક્રિયા ક્રિયા કર્યા ક્રિયા ક્રિયા ક્રિયા ક્રિયા માર્કે સ્ટ્રિયા ક્રિયા ક્ર્યા ક્રિયા ક્ર્યા ક્રિયા ક

को अस्ट ड्रीहिसरे द्रोटिं सम्भागित का हिया मीट्रिंस अव अर्थ को हिस्सी शुद्ध राष्ट्रीं केरिंस के आ आर्जाक

(अंड्रे

रूम- स्था स्टिंग अखि स्म- श्रीमा खुक्कि क्राम अन् अर्थक्रेश अंत्र स्मायुक्त अर्थे अन् र्यास क्रिकेष स्मायुक्त अर्थे

31 m, 10

स्तुरु गुल्लिकार क्षा इस्तुरु गुल्लिकार क्षा क्षेत्र क्षेत्र

अस्त क्रामुं स्टिश्मा अस्त क्रामुं अस्त ठवंतु क्रामुं क्रामुं स्टिश्मा क्रामुं क्रामु

क्षिप्रग्रम् कुर्याक एमा में स्मिन्त । अ क्षिप्त कुर्याक कुर कार्यक्रीक्रीकार कार्यश्राकार मेंकि, १० १२ भित्रकारकार १० विकास भवाष्ट्रकार इति भएत वैक्ट-भवाष्ट्रकारकार इति भएत वैक्ट-भवाष्ट्रकारकार इति भएते वैक्टि-

अभूष्यं अभूष्यं स्थाप्ति क्रिक्ट अप्ति अभूष्यं अभूष्यं स्थाप्ति क्रिक्ट य्रमं यद्द क्रिक्ट प्रश्निक्षं क्रिक्ट र्यम्पितं द्विभूषे प्रश्निक्षं

The serve उपित्रक शिक्ष किया किया JAMES AND SESTING SISTER न्तर नेगंड्य माहाम अपर प्रि शिहां कार धाराय हाया हे तुरा

किन-कर करत किराय भाशा है उन्मारी क्षान किराम क्राम यत-मेरशुक कर्तर काम्प्र कु ा म्हिलाता होते क्रिया वास्त christan en page emma कर्मन अमिर वर्ष (राम अमिर रिक्ष स्थित अह आहमान-० राज्यान आसार आस्त्रात सम्मार १३

अम्मिक्स एर व देर पर भाव ने Burg was consumer SILVA REME LEGIELE CARREL O JEND - CHIZANI FRE STANGARY!

243.W.SJO

25

क्टिन्यस्य अध्यास्य क्टिन लाहीय वस्त्री, विश्वाप्रभागां क हराया स्राधाना स्राधाना में कार्या विकास मार्का उपार्थित है।।।।

भारति गरे अग्रधनी लाडान क्रियी-कर्त क्रिय भार्माक्री रएतर सम्बार के विद्यान २००४ रामुस्य कार्य सार्व म्याव नार्वा अर्डा - प्रार्थ के क्षिक निर्देश के निर्देश के अक्षर र ना विद्यारी र स्वर्ध anside : दिय क्या-misma CONTROL STORMENT OF MY 2018 18

132002 2044-344 Dryrs 200 ११ म - १९ में - डेल्क्स अमान्य थ ए अस्ति के का प्रमान के में कर का No Wall Course in Line on Silver क्ट्र्स्स रंग्रिक ट्रिस हिंग्रेस स्था। १२ सर्भर क्रेस्स क्रिस्ट्रिस क्रिस्स ज्यापार स्ट्रिस्स क्रिस्स क्रिस्स इस्प्रिक क्रिस क्रिस्ट्रिस्स अंदर्श्य

mist ry-nama

(८८३४-१५ १७४८ सम

224-2442 (22) (1346-344) (1346



अक्षि- किष्ट्रस्य क्रम्स्य अपूर्व हें ३०० १५०में -२०० स्व- दे बड़ी --००० प्रवेश्यासूत्रीक यात्रीय, त्रिक्-००, याय्या क्रम्या- स्वक्रम्यां ००० १४म्म क्रम्य

આ - ઝૂમેણ ખ્યાસ્ટ મા વાર્ , & ડા.સ અત્યાં હૈયુક કોર્મેર સ્કેટ ત્યુક્રમે પ્રાપ્ય પ્રાપ્તાસત રાષ્ટ્ર સ્પ્રિકામ સ્ટાપ્ત સ્પિક કિંમ જ્ર

क्रास्तिक क्षेत्र क्षेत्र भिर्म हिंदी भिर्म । ख्रास्त । ख्रास्ति । क्षित भिर्म । स्थार । द्वास्ति । स्थार । द्वास्ति । स्थार । स्थार क्ष्य क्ष्य क्ष्य । स्थार क्ष्य क्

र्कार मित्रका हाई क्रेस-हार्व-न्त्र क्रायो-रिकास - क्रियाल रहेगी-

्या मः

देंगाल संक्षि इम्स्टिया कातं। १ क्राप्त-ल्याड क्रीन्डिक्स्र क्राप्त १०

સ્કુચ્ચ્ચ્ય અક હ્યુક્સ્પાના ક્રામ્ય ક્રિયા ક્ર્યા ક્રિયા ક્રિયા

स्रीम्पद्धिः अपने किम्पाः स्थाप्ताः । ।-(भिष्ठः सिम्प्रस्य मैकान्छ-काने २० र्नात्रः अप्राप्ति संभागः भरतः २० भिष्ठः स्थाप्त्रक्त ब्रास्तिक स्थार

स्य इक्षे स्यो संस्था स्थाय है । १ वर्ष स्थित क्यान स्थित मीज्य के के स्थाय शासिक स्थात इप्यान के के मून्य यात्यात स्थाय स्थान है की ज्यानेम, क्रेस ज्यार ग्राम्य वृष्टि । २० विद्याहरी प्रामी- लाव १ तह्मार २००० भष्टीं क्र्यार क्रियां क्राह्म क्रियां क्रियं क्र

त्मारं अस्त हिल् - अशुन म्हल शिन आहे स्व क्ष्मारं भूम- अर्मकारं २० निस्त अस्त स्व क्ष्मारं क्ष्मारं १० स्वारं क्ष्मां स्वारं स्व स्व श्रिक्त १० स्वारं क्ष्मां स्वारं क्ष्मां स्वारं क्ष्मां क्ष्

ઝલાશુ હોલંલ. સ્ટીક્સ વ્યవમાં 135 ૧૧ તેવમુર સામ્પા-સાસ્પ્રા-22 રેલ્ફ શુધુ અરુ ભિત્યવ વિસ્પેર્ટ (સ્પાડેશ્રેર-મિશ્રેશ જાશુવિલ્ફાયુંની

ारास्त स्थान में मुंच कारास्त है। विद्र रिसरे कार्स स्थान केर्या हमर्रा २०५० श्रुक्तार्स स्थान केर्या हमर्रा २०५० श्रुक्तार स्थान केर्या कार्यान २० श्रुक्ता सेर्से कार्या कार्या कर्या केर्य केर्या केर्या है। या स्थान केर्या केर्या है। या स्थान केर्या हिन केर्या केर्य

स्ति अर्था कार्य कार्य कार्य हार्य । १००० । १०० ।

(उध्यक्ष मामापु

पर द्यार परिषद्ध गाया निर्देशक SLEWINGHER EXTENDED CANDERVANTA CANDAN CANDERS किष्ठि क्रम्य ज्ञानामा है। के के 'हाघाट हातर ; कार दर्भाता! असम (मेरे ब्रोक कार्य है र र र र (रमान कार्य- समय विकाम) (ब्रह्मित्रका श्रेष मातु मत्रके । अन - 212 40

DIEWEND כתונים של אינו בו הבומו) भागिए अल्ये मार्डिस स्थार प्राप्तिक सिर्द्रमा मारह पर का मारह ने स्रिक्ष मिड्न अक्षार्य स्र en rue sexus sur de कार क्षित किए कार्य कारा JAN FLASI BLY SAN FINE belterne more thank he real

88

এই



अअअ सम्भ

। अरायान वर्तन

के के 3 दे अधिता ति कि कि के अव के अव के अधिता ति कि कि कि कि का कि का

भित्र क्राक्रक स्ट्रास्ट्र स्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्रास्ट्र स्ट्र स्

मुरा ग्रेशक-माश्र (त्र प्रकंश, क्ष

या कंते (मध्ये प्रायम्) में से हैं है अप्रमाश्चर स्वेष्ट्र स्वयम्त्र ने गड़े हैं के अपर्य अव्यक्त प्रमायम्य स्थाड़ है हैं है उत्तर (वृष्ट्र स्वयः स्वयः स्थाड़ स्वयः श्री

માર્ગમ શાયા શ્રાહ્ય સહ્યુદ્ધ યશ્ય ; ૯ (સ્પ્રાપ્ત કોલ્મ પ્રાપ્ત કે ફોલ્માટ કુ શ્રમ્મ જપમાશ ' સૈંગ હિલ્મિલન કુટ્ર (સ્પરસિક્ષ. પશ્ચી-અશ્રમ 'શ્રત્મનં કુ किर- सिम्भियरं द्वीर्व हीर्व मेता, उपन्य अपम्पत्म तैवन्नेवा स हे भिराष्ट्र अस्मर्व २१ प्रम्येन क्रिक्ट भुडाष्म ब्रेड्यम्- क्रियम्म २ क्रेन्नक

अस्तर अस्टिन निक्ष्य निक्षा निक्षित्र । क्र अस्त्रीन प्यार काश्यक भी रेन हुन्, भिर्माण्य अस्ति के ध्रिय साम्य हुन् भिर्माण्य प्रमात के स्था म्हिन

िर क्ष्मा इपका भीत क्याहा ग्राप

काम क्षित्य क्ष्य क्ष्य का किन्नेन क्षित्यक क्ष्य क्

काम्मेन संकाल हारानाव पर्व । २० त्रापु ऽंग्रात काम्मारव हा हु ? मान कांतु साम काम्मारव हा हु ? मान कांतु साम काम्मारव पर्व ३३ मान कांतु भी का कार्य का वृद्ध नित्र स्थाति माम्मेन काम्मेन कार्य नि

सँग- रुग्ने पुट्टा-एर एउटा उरास वर्षु वा एम एकर 'स्था मुद्र एएराया-

વજિ

किम्मुल्य क्रिक्ट स्टिन् स्थान अपिता के कि

જે. (ખત્રા) ભ્રમ જાપાડ હારા લેકાન હોડ! જે કોમ સામારામ ' જેલ્સ્ટ લેકાન હોડ! આપ્ર જાપાડ કાહેક લેકાન હોડ પારું જાપાર કાહેક લુકાન જે પારું કાર્મેં સામાર હોડો કહેં આપ્ર જે જેમાં કુલિ હોડા સામારે હોડો જા જે જેમાં કુલિ હોડા સામારે હોડો

स्थार स्थाप कासिक मार्ग समि सामक सैंग्रहित्योग

-512,21°

क रिक्षाम्यावं म्या छक्ता कर्मा के विकास्ता कर्मा के विकास कर्मा करा कर्मा कर

ગ્રાસ્ટ્ર હ્યુવભારું જ્યાતે ક્યારે >8 કહ્યુંગા સ્કુત્યાને (કર્માણ હ્યાનુંલ્ડ રૂક ૧૩- નાભ ૧૩ રું- ક્રાલ્ટ ક્રેડમ કર્ફુ એક્રો-સત્ત રૂપર ભારાભવે સ્પ્રેં કર્ફ

हैं धरायाम काक अरमत्म त्यावं १९९ अव्ये - काम मन्द्र - अरमाक १००० भिन्न - स्पूर्य - इन्ह्य - स्याविकावं १६७ अरम्भ - इन्हर्या केन्द्रीया साव ३०००

(এঙ্কি

क्याकात्र मन्य राज्याच्य

क्रास्टर्स्स क्रास्टर्स्स

234-24.49- 4110561 4014. 12 & 124-12 &

अर्थित क्या स्थान क्या स्थित के भिर्म क्या मार्थी- क्या स्थित के अर्थित क्या मार्थी- क्या स्थित के अर्थित क्या स्थान क्या स्थित के अर्थित क्या स्थान क्या स्थान के



बर्गाः उत्त स्रांगे द्रांगः १२३

क्षीय उत्पाव स्थित (स्पर्म) है। रिक्षित वर्षा देवडी काह के रुपारी प्रवास क्रियामुडी अपर क्रमें में रिष्ण क्रम ब्राह्मर्गिक

क्षात्र प्रकार क्षात्र निष्य निष्य निष्य निष्य क्षात्र क्षात्

यार्थ तीय अस्त अस्त सार्थ । त स्थित क्षित्र क्षित्र अस्त क्षित्र क्ष्य क

रिन्स्सार्ड (स्सर्टि स्स्तर्टि (स्सर्टित्स्,) इंडर्स्ट्रे स्स्रिंग डॉड्ड्रेड (स्स्स्त्र दे इस्ट्रेस्ट इंट्रेड्ड्रिड्ड (स्स्रेट्ट) मेरे-(पत्त्रात क्राक्ट्रिस स्तर्टिड्ड

असु स्पेल (५४- इंडाक्क ट्र न् विं । इसम् स्पिर्युष्म ने अन्वास सर्वे अर्द्वर्यत्म (६५ न्याप्क । स्पेर्डाव अस्ति, भुक्य स्पित्न व्हार्य, शुल्य ने

स्य उम्हार अध्यक्ष मान की

(પ્રાક્ત સત્તામ પ્રાંગેઇ સરાય: ૧) પાય પ્રાપ્ત અર્ગ કોલ્સ્ય સાધુ ૧૧૧૧ ૧૧૧

३३११९ मिक्र १९८ ११ स्ट का ११९ ११ १८४३ (सम्प्र संतुक्त (स्ट अपन् १८४१ विस्त कर १५ मिले वा १४६ १८६१ विस्त स्ट स्टाप का मिले १८६१ - इप्त के स्टि का १९६१ १८६३ - १८५३ १ स्ट १८६३ १९६ १८६३ - १८५३ १ स्ट १८६३ १८६

महर्ता क्रिक्ट भरा-स्तृत क्रम्यास्य !!! भग्ने प्रक्रिक्ट भरा-स्त्रम्यक्षक भग्ने प्रक्रिक भरा-स्त्रम्य

(નુડ્ડિં જો_ગ

निर्म क्राम्स एम क्रम्स ट्रका ३००० विश्व अववं त्यामां एम्प्राम ३०० १३- म्या क्रमंग्राम कावं २००७ १३- म्या क्रमंग्राम कावं २०००० १५० म्या क्रमंग्राम कावं त्याम ३००००

े स्ते के कुट मख- हरियर तर्स तर्म कि में मिक्स कुड़ा जु दिस्तर ने (क् -) में में का कि दिस्त प्रिय के प्रमान के कि में कु मार का का मार के प्रमान के कि हिल मार में मार के प्रमान के कि प्रमान के प्रमान के कि में कि में कि में कि मार के प्रमान के कि कि में कि मार मार कि कि में कि में कि में कि मार के प्रमान के कि

त्रीत्र कार्या स्ट्रिस्टर्स आयुंग्र म्प्रिस्टिस्ट्र् क्रमसम् सर्वेष सर्वेस्ट्रस्य ज्ञान । 38 स्ट्रिक्ट्रिस क्राईक्ट्रस्य स्थान स्ट्रिक्ट्रस्य क्राईक्ट्रस्य भारत्वेक्ट्रस्य क्राईक्ट्रस्य क्रान्यस्य सर्वेष्ट्रस्य ज्ञान । 38

अक्रम्स सम अक्ष्मिक क्षेत्री ३७ सम्मे क्षेत्रम स्मिक्क क्षेत्री अक्ष्मिक सैकल्पि (स्मिर्स व्यापन क्षिमित हिल्मिस

उत्तर क्रास्ट्र क्याक क्यान क्रांस्ट्र क्रा

" त्रमं स्ट्रांश हैंसर आंग्रे असे र्वेण आंग्रे का केल

(अझि

વૃદ્યત્વાસ્ત્ર અસ્તર હૈલ્ય જ્યિલ્ય સભ સિમ શકે દૃષ્ પ્રમુખ્ય ભાગુમા ભાગુમા કિલ્મામ ગુજ માર્યુજ્ય સમ્યુમ્ય સંભૂત બોક્યું જ્યા

जिसाल मार असर कार हो।

હાહ ક્રાર (જેમ કોક્સસપાઈ ઝાલ ફેશ્મ (જે સ્પારા- શહેજો 183- નોહોલ ક્રૈક્શ્ય કરું જાવ્યોશું ના દન ક્રાચા મૈલ્મર શૈપશું ક્રોશું ગાંધ

अभन्तकारण निश्च च न्यान-तक्राह्मा मामं प्याना सुन्यान् भक्षात्रकः यत्र पर्व (प्राप्त रै.ज. न्यान् पत्र प्राप्त क्रान्य हैर्यान्ति प्राप्त क्रान्यहितानाम हैर्यान्ति स्याक - व्यान न्यान क तत्त्रम स्मुक्ष्ण, स्मुक्त घटड स्प्रजी १३२) क उर्देश्य एर्युक्त श्रम्भिक्ट १८५०८ ८५

हुत स्थाप्र कार्य कार्य

'फ्याकुर्य कंशत्य खाक्रकाषाएक।ऽऽ सर्वेक्ष्यं क्राक्ति कंसैक्ति एर्येक्ष्यं स्रीक्र-रत्त्वीवप्-वार्ड काक्येक् सर्वेक्ष्यं न ज्यार्थे प्रारंशिक क्रियेष

जस्य भिष्टात काउरांट का वर्षे । १२ (व्हें कर्रात्र के कि सम्म भिरम् कर्म कर्म कर्म कर्म सिर्कार का स्मान क्षेत्र कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म क्षेत्र का सम्मान क्षेत्रक सम्मान द्रिकारी - स्टिश्च क्रिक्ट क्षेत्र कर्म क्षेत्र द्रिकारी - स्टिश्च क्रिक्ट क्षित्र कर्म क्षेत्र द्रिकारी - स्टिश्च क्रिक्ट क्षेत्र कर्म क्षेत्र द्रिकारी - स्टिश्च क्रिक्ट क्षेत्र कर्म क्षेत्र क्षेत्र - ख्रिक्ट क्रिक्ट क्षेत्र क्षेत्र कर्म क्षेत्र

उत्तर्भक्त- स्वाप्त काराव इतंत्र- 158 कारान्यात कडार स्वाप्तिय इतंत्र-इका. तुन्छांप इरावंत रंज्य-वस्ति याती का का क्रीकि याभन्द उर्नन

5) रामाडा रूल उंग मामाडा । 23-CONDEN SOLDEN MES 219-म्प्रिकारा हिल्ला है उस भारत हिल्ला જિજ્જામાં કુંગ્રેમે ભાષ્ય કર્યા બાદ अस्तिन हार हिर्मा हरे JUNCA ENLAS ALLE PAZE 1303 (42 55 478)US कर नियम के पर के पर का मार करा मार है है

क्रास्त १६९८ (मा-अ्यंत वैपन WHAS COMEN CULLE मिर्मित्र अंगि (on (विशे कारिए नाजिन विका शाक नार्व । १५

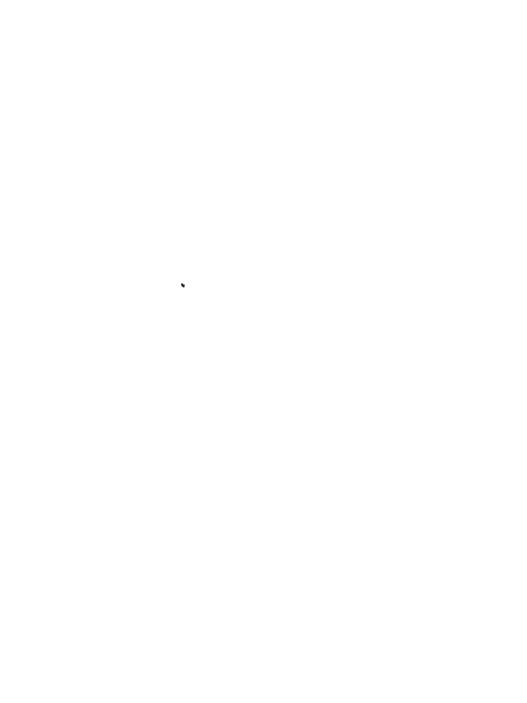
817-3-NA, ENGSES 2NO. (क्रिकिम कुलाम भर्तुन विभाप स्ट्राज्य के के प्राप्त किया है उस्तिक नार्य में में में में में में

क्रास्ट ज्यासे सर्व यमं कं । के रीक स्यास्त्री कं तम हरूमा कार्यमा कर भूम स्थापिक तम हरूमा कार्यमा क्रिक इसो ख्रिस्स क्रमें स्थामात्र क्रिक

ક્લ્મ (એસ્સિક સૈસ 193 કર્ય! ડેમ 334- સત્મ મામ, લ્સ્ટ્ર - કેટ્ટ્ર 244 સ્લ્લે (સ્પ્રાષ્ટ્રન ર્સ્ટ્રોમ - કુ મખાં અસમ શર અચા મુ કર્ડ શ્વાસ્ત્ર કૃત્ર મામ્યુ ક્રિક્ટા અંક ! વૃ 311 મહ્યા મામ મામ મામ કૃત્ર માર્ક્સ માર્ક્સ માર્ક્સ માર્ક્સ માર્ક્સ માર્ક્સ કૃત્ર કૃત્ર માર્ક્સ કૃત્ર કૃત્ર માર્ક્સ કૃત્ર કૃત્ર માર્ક્સ કૃત્ય માર્કે માર્ક

ENEW FILS. WESA

ঋতুসংহারম্



ঋতুসংহারম্

প্রথমঃ সর্গঃ

প্রীত্মবর্ণসম্

স্পৃহণীয়-চন্দ্রমাঃ সদাবগাহক্ষত-বারি-সঞ্চয়: । প্রচণ্ড-সূর্য্যঃ দিনস্তিরম্যোহত্যপশান্তমন্মথো নিদাঘ-কালোহয়মুপাগতঃ প্রিয়ে॥ ১॥ শশাক্ষতনীলরাজয়ঃ কচিদ্বিচিত্রং जनयञ्जयनिम्त्रम्। মণিপ্রকারা: সরসঞ্চ চন্দনং শুচৌ প্রিয়ে যান্তি জনস্থ সেব্যতাম্॥ ২ ॥ স্থবাসিতং হৰ্ম্ম্যতলং মনোহরং প্রিয়ামুখোচ্ছাসবিকম্পিতং মধু। স্থৃতন্ত্রি-গীতং মদনস্থ দীপনং শুচৌ মিশীথে২সুভবস্তি কামিনঃ॥ ৩॥ নিতম্ববিস্থৈঃ সত্ত্রকুলমেখলৈঃ স্তনেঃ সহারাভরণৈঃ সচন্দনৈঃ। শিরোরুহৈঃ স্নানক্ষায়-বাসিতৈঃ দ্রিয়ো নিদাঘং শময়স্তি কামিনাম্॥ ৪॥ নিতাস্তলাক্ষারসরাগলোহিতৈর্নিভস্বিনীনাঞ্চরণৈঃসনুপুরেঃ। পদে পদে হংসরুতামুকারিভির্জনস্থ চিন্তং ক্রিয়তে সমন্মথম্॥৫॥ পয়োধরাশ্চন্দনপঙ্ক-চর্চিতাস্ক্রযার-গৌরার্গিতহার-শেখরাঃ। নিতম্বদেশাশ্চ সহেমমেখলাঃ প্রকুর্বতে কম্ম মনো ন সোৎস্কুকুমু॥ ৬॥ সমুদগত-স্বেদচিতাঙ্গ-সন্ধয়ো বিমূচ্য বাসাংসি গুরুণি সাম্প্রতম্। স্তনেষু তন্বংশুক-মুল্লতস্তনা নিকেশয়স্তি প্রমদাঃ সংযৌবনাঃ॥ ৭॥ সচন্দনাম্ব্রাজনোন্তবানিলৈঃ সহারষষ্ঠিস্তনমণ্ডলার্প ণৈঃ। সবল্লকী-কাকলিগীতনিস্বনৈর্ব্বিবোধ্যতে স্বপ্ত ইবাছ্য মন্মথঃ॥৮॥ সিতেষু হর্ম্মেষু নিশাস্ত যোষিতাং স্থথপ্রস্তানি মুখানি চক্রমাঃ। বিলোক্য নুনং ভূশমূৎস্থকশ্চিরং নিশাক্ষয়ে যাতি ব্লিয়েব পাণ্ডুতাম্॥ ৯॥ অসহাবাতোদ্ধভরেণুমণ্ডলা প্রচণ্ড-সূর্য্যাভপ-ভাপিতা মহী। न भकार् अहे मि প्रवामिणिः প্রিয়াবিয়োগানলদম্মানদৈ: ॥ ১ ॥

মুগা: প্রচণ্ডাতপতাপিতা ভূশং তৃষা মহত্যা পরিশুক্ষ-তালব:। বনাস্করে তোয়মিতি প্রধাবিতা নিরীকা ভিন্নাঞ্জনসন্ধিভন্নভঃ॥ ১১॥ সবিভ্রমৈ: সম্মিতজিমাবীক্ষিতৈর্বিকাসবতো। মনসি প্রবাসিমাম। অনক্সন্দীপনমাশু কুর্বতে যথা প্রদোষাঃ শশিচারুভূষণাঃ॥ ১২॥ রবের্ময়ুখৈরভিতাপিতো ভূশং বিদহামানঃ পথি তপ্তপাংশুভিঃ। অবাদ্মখোহজিক্ষগতি র্শ্বসমূহঃ ফণী ময়ুরস্থ তলে নিষীদতি॥ ১৩॥ ত্যা মহত্যা হতবিক্রেমোছমঃ শ্বসন্মুছদুর-বিদারিতাননঃ! ন হস্তাদূরেহপি গজামা গেশবো বিলোলজিহ্বশ্চলিতাগ্রকেশরঃ॥ ১৪॥ বিক্ষকপাত্তভূমিকরাম্ভদাে গভস্তিভির্ভামুমতােহমুতাপিতাঃ। প্রবন্ধতফোপহতা জলার্থিনো ন দন্তিনঃ কেশরিণোহপি বিভাতি॥ ১৫॥ কুতাগ্রিকল্পৈ: সবিতুর্গভন্তিভি: কলাপিন: ক্লান্তশরীর-চেতনা:। ন ভোগিনং দ্বস্তি সমীপবর্ত্তিনং কলাপচক্রেষু নিবেশিতাননম্॥ ১৬॥ সভদ্রমুক্তং পরিশুক্তক্দিমং সর: খনশ্লায়তপোত্রমগুলৈ:। রবের্ম্ময়ুখৈরভিতাপিতো ভূশং বরাহযুখো বিশতীব ভূতলম্॥ ১৭॥ বিবস্থতা তীক্ষতরাংশুমালিনা সপস্কতোয়াৎ সরসোহভিতাপিতঃ। উৎপ্লতা ভেকস্তবিত্তা ভোগিনঃ ফণাতপঞ্জ তলে নিষীদতি॥ ১৮॥ সমৃদ্ধৃতাশেষমৃণাল-জালকং বিপন্নমীনং দ্রুতভীতসারসম্। পরম্পারোৎপীড়নসংহতৈর্গজ্ঞৈ কৃতং সরঃ সাক্রবিমদ্দ-কৰ্দ্দমম। ১৯। রবিপ্রভোত্তিরশিরোমণিপ্রভো বিলোলজিহ্বাদ্বয়লীচমারুতঃ। বিষাগ্নি সূর্য্যাতপতাপিতঃ ফণী ন হস্তি মণ্ডুককুলং তৃষাকুলঃ॥ ২০॥ সক্ষেনলোলায়তবক্ত্র সম্পূটং বিনিঃস্তালোহিতজিহ্বমুশুখম্। ত্যাকুল: নিঃস্তমন্ত্রিগহ্বরাদবেক্ষমাণং মহিষীকুলং জলম্॥ ২১॥ পটুতরদবদাহে।চ্ছুক্দ-শস্ত-প্ররোহাঃ পরুষপবনবেগোৎক্ষিপ্তসংশুক্ষপর্ণাঃ। দিনকরপরিতাপক্ষীণতোয়াঃ সমস্তাদ্বিদধতি ভয়মুচৈচবীক্ষ্যমাণা বনাস্তাঃ ॥ ২২ ॥

ঋতুসংহারম্

শ্বিতি বিহগবর্গঃ শীর্ল-পর্ল-ক্রমন্থঃ কপিকুলমুপ্যাতি ক্লান্তমন্তের্নিকুঞ্জন্ ।
ভ্রমতি গবয়ষ্থ সর্ববিতন্তোয়মিচছঞ্জনভক্লমজিলাং প্রোদ্ধরতাম্ব কৃপাৎ ॥ ২৩ ॥
বিকচ-নবকুস্তন্ত-সচছ-সিন্দুরভাসা প্রবল-পবনবেগোদ্ভ্ত-বেগেন তূর্ণম্ ।
তটবিউপলতাগ্রালিক্রন-বাাকুলেন দিশি দিশি পরিদ্ধা ভূময়ঃ পাবেকেন ॥ ২৪ ॥
জ্বলতি পবনবৃদ্ধঃ পর্বতানাং দরীষ্ ক্ষ্টিতি পটুনিনানিঃ শুদ্ধলাষ্ ।
প্রসরতি তৃণমধ্যং লব্ধরন্ধিঃ ক্ষণেন মপ্রতি মৃগবর্গং প্রান্তলয়ো দবাগ্নি ॥ ২৫ ॥
বহুতব ইব জাতঃ শালালীনাংবনেষ্ ক্ষুরতি কনকগৌরঃ কোটরেষ্ ক্রমাণাম্ ।
পরিণতদলশাখামুৎপত্তন প্রাংশুরক্ষান্ ভ্রমতি পবনবৃতঃ সর্বব্যোহ্যির্বনান্তে ॥ ২৬
গজবগয়মুগেক্রা বহিন্দন্তপ্রদেহাঃ স্কুল্ল ইব সমেতা দক্ষভাবং বিহায় ।
হতবহপরিখেদাদাশু নির্গতা কক্ষান্তিপুলপুলিনদেশান্নিমগাং সংবিশন্তি ॥ ২৭ ॥
কমলবনচিতামুঃ পাটলামোদ্রমাঃ স্থেদলিলনিষ্কেঃ সেব্যচন্দ্রাংশুহারঃ ।
ব্রজতু তব নিদাবঃকামিনীভিঃ সমেতো নিশি স্বললিত্নীতে হর্ম্মপৃষ্ঠে স্থ্পেন ॥ ২৮

স্বিতীয়ঃ সর্গঃ বর্ষাবর্ণনম্

স-শীকরারেয়াগরমন্তকুঞ্জরস্তডিৎপতাকো>শনিশব্দমদ্বিলঃ। সনাগতো রাজবদ্ধরভুদ্ধাতির্ঘনাগমঃ কামিজনপ্রিয়ঃ প্রিয়ে॥ ১॥ নিতান্ত্রনীলোৎপলপত্রকান্তিভিঃ কচিৎ প্রভিন্নাঞ্জনরাশিস্টিটিভঃ। ক্ষতিং স্থৰ্ভ-প্ৰমূদা-জনপ্ৰতিঃ সমাচিতং বোাম বনৈঃ সমস্ততঃ॥ ২ ॥ ভ্ষাকুলৈশ্চাতকপক্ষিণাং কুলৈঃ প্রযাচিতাস্তোয়ভরাবলম্বিনঃ। প্রথান্তি মন্দং বভ্ধারবর্ষিণো বলাহকাঃ শ্রোত্রমনোহরস্বানাঃ॥ ৩॥ বলাহকাশ্চাশনিশকমর্দলোঃ স্তুরেন্দ্রচাপং দধতস্তভিদগুণম। স্ত্রীক্ষধারাপতনোগ্রসায়কৈস্তদন্তি চেতঃ প্রসভং প্রবাসিনাম্॥ ৪॥ প্রভিন্নবৈদ্যানিভৈন্তগাঙ্কুরৈঃ সমাচিতা প্রোণিতকন্দলী-দলৈঃ। বিভাতি শুক্লেতররভুত্বিতা বরাঙ্গমেব ক্ষিতিরিন্দ্রগোপকৈঃ॥ ৫॥ সদা মনোজ্যং স্বনদ্রৎসবোৎস্তুকং বিকীর্ণ-বিস্তীর্ণকলাপশোভিতম। সসংভ্ৰমালিজনচুম্বনাকুলং প্ৰবৃত্ত-নৃত্যং কুল্মভ বহিণাম॥ ৬॥ নিপাত্যক্তাঃ পরিতস্তটদ্রুমান প্রবুদ্ধবৈগৈঃ সলিলৈরনির্মালঃ। ব্রিয়ং তুতুষ্টা ইব জাতবি ত্রমাঃ প্রয়ান্তিনছত্বরিতং পয়োনিধিম্॥ ৭॥ তৃণোৎকরৈরুদগতকোমলাস্কুরৈর্বিচিত্রনীলৈইরিণী-মুখ-ক্ষটেঃ। বনানি কৈলানি হরন্তি মানসং বিভূষিতাক্যুলগতপল্লবৈদ্র্য মিঃ॥ ৮॥ বিলোলনেত্রোৎপলশোভিতাননৈমু হৈঃ সমস্তাত্রপজাতসাধ্বসৈঃ। সমাচিতা সৈকতিনী বনস্থলী স^{েত্ৰ}ক হং প্ৰকরোতি চেতসঃ॥ ৯॥

ততিৎ প্রভা-দর্শিত-মার্গ-ভূময়ঃ প্রয়ান্তি রাগাদভিসারিকাঃ স্ত্রিয়ঃ॥ ১০॥ পয়োধবৈর্তীম গভীর-নিস্বনৈ-স্তডিস্কিক্সছেজিত-চেতসো ভশম। কুতাপরাক্রনপি যোষিতঃ প্রিয়ান পরিগলক্তে শয়নে নিরন্তরম ॥ ১১ ॥ বিলোচনেন্দীবরবারিবিন্দভির্নিযিক্তবিস্বাধরচারুপল্লবাঃ। নিরস্তমাল্যাভরণামুলেপনাঃ স্থিতা নিরাশাঃ প্রমদাঃ প্রবাসিমাম ॥ ১২ ॥ কীটরজন্তণাশ্বিতং ভুজঙ্গবদ্দ্রকগতি-প্রসর্পিতম : বিপাশুরং সদাধ্বসৈত্তেককুলৈনিরীক্ষিতং প্রয়াতি নিমাভিমুখং নবোদকম॥ ১৩। বিপরপুষ্পাং নলিনীং সমূৎফুকা বিহায় ভূঙ্গাঃ শ্রুতিহারিনিম্বনাঃ। পতন্তি মূঢাঃ শিখিনাং প্রানুতাতাং কলাপচক্রেষু নবোৎপলাশয়। । ১৪॥ বনদিপানাং নববারিদ্স্বনৈর্মাদান্বিতানাং ধ্বনতাং মৃত্ম তুঃ। কপোলদেশা বিমলোৎপলপ্রভাঃ সভূক্ষযুথৈর্ম্মদবারিভিশ্চিতাঃ॥ ১৫॥ সিতোৎপলাভাম্বদচ্মিতোপলাঃ সমাচিতাঃ প্রস্রবলঃ সংস্তৃতঃ। প্রবন্তনুট্যঃ শিথিভিঃ সমাকুলাঃ সমুৎত্কজং জনয়স্তি ভূগরাঃ॥ ১৬॥ কদম্বদর্জ্জার্জনকেত্রকীবনং প্রকম্পায়ংস্তৎকু মুমাধিবাসিতঃ। সশীকরাস্ভোধরসঙ্গশীতলঃ সমীরণঃ কং ন করোতি সোৎস্কুম্॥ ১৭॥ শিরোরুহৈঃ শ্রোণিতটাবলম্বিভিঃ কুতাবতংসৈঃ কুস্তুমিঃ স্থান্ধিভিঃ। रुटेनः महादेवर्त्वपटेनः मनीधूण्डिः खिरा द्रा दिः मक्षनग्रस्य कामिनाम्॥ ১৮॥ ভড়িল্লতা-শত্রুধন্ম-ব্বিভূথিতাঃ পয়োগরাস্তোয়ভরাবলম্বিনঃ। স্ত্রিয়শ্চ কাঞ্চীমণিকুগুলোজ্জলা হরস্তি চেতো যুগপৎ প্রবাসিনাম্॥ ১৯॥ মালাঃ কদম্ব-নব-কেশর-কেত্রকীভিরাযোজিতাঃ শিরসি বিভতি যোষিতো**>**ছা। কর্ণাস্তরেষু ককুভ-দ্রুম-মঞ্জরীভিরিচ্ছামুকুল-রচিতানবতংসকাংশ্চ ॥ ২০ ॥

কালাগুরু-প্রচর-চন্দন-চর্চিচ হাঙ্গাঃ পুষ্পারতংস-সুরভীকৃত-কেশপাশাঃ। শ্রুত্বা ধ্বনিং জলমূচাং ত্বরিতং প্রদোষে শ্যাগ্যহং গুরুগুছাৎ প্রবিশক্তি নার্যাঃ॥ ২১ कुर्यन्त्रप्रमानीरिनक्षत्ररेजरङ्कारा-नरेश्चर्यक्र कृ-भवनिवृद्येज्यान्त्रम्यन्तः व्यक्तिः। অপহাতমিব চেতস্তোয়দৈঃ সেন্দ্রচ[†]গৈঃ পথিকজনবধুনাং তদ্বিয়োগাকুলানাম্ ॥ ২২ মুদিত ইব কদদৈর্জাতপুল্পৈঃ সমস্তাৎ প্রনচলিত-শাখৈঃ শাখিভিন্ ত্যতীব। হসিত্রমিববিধত্তে স্টুচিভিঃ কেত্রকীনাং নবসলিলনিষেক চ্ছিন্নতাপো বনাস্তঃ॥ ২৩ শিরসি বকুলমালাং মাল্টীভিঃ সমেতাং বিকসিত্নবপুলেপ্র থিকাকুটালে**চ**। বিকচনবকদক্ষৈঃ কর্ণপূরং বধূনাং রচয়তি জলদৌঘঃ কান্তগৎ কাল এষঃ॥ ২৪ দ্ধতি বরকুচাগ্রৈরুক্সতৈর্হারষ্ট্রিং প্রতনুসিত্তুকুলাভায়তেঃ শ্রোণিবিধ্যিঃ। নবক্তলকণদেকাদুদ্দাতাং রোমরাজিং ললিতবলিবিভাগৈশ্মধাদেশৈদ্য নার্যাঃ॥ ২৫ নবজলকণসঙ্গাচ্ছী হুহামাদধানঃ কুন্তুমভরনহানাং লাসকঃ পাদশানাম্। জনিত্রুচিরগন্ধঃ কেত্রকীনাং রজোভিঃ পরিহরতি নভস্বান্ প্রোধিতানাং মনাংসি॥ ২৬ জলভরবিনতানামাশ্রয়োহস্মাকমুক্তৈরয়মিতি জলদেকৈস্তোয়দাস্তোয়ন্<u>মাঃ</u>। অতিশয়পরুষাভিগ্রীগ্রবক্তেঃ শিখাভিঃ সমুপজনিততাপং হলাদয়ন্তার বিদ্ধাম॥ ২৭ বভগুণরমণীয়ঃ কামিনীচিত্তহারী ভরুবিটপ্রভানাং বান্ধবো নির্বিকারঃ। জ্লদসময় এষ প্রাণিনাং প্রাণভূতো দিশত তব হিতানি প্রায়শো বাঞ্ছিতানি॥ ২৮

তৃতীয়ঃ সর্গঃ

শরত্বপিয

कांगां एका विकठ-शच्चमत्नाञ्जवक् । त्रांनाप-श्मत्रवनृश्वतापत्रमा । আপক-শালিক্সচিরা ভমুগাত্রযক্তিঃ প্রাপ্তা শরন্নববধূরিব কাশৈর্ম্মহী শিশিরদীধিতিনা রজত্যো হংসৈর্জলানি সবিতাং কুমুদ্রৈ সরাংসি। সপ্তচ্ছদৈঃ কুস্তমভারনতৈর্বনাস্তাঃ শুক্লীকৃতাম্যুপবনানি চ মালতীভিঃ॥ ২॥ চঞ্চন্মনোজ্জ্লাফরীরসনাকলাপাঃ পর্য্যস্ত-সংস্থিতসিতাগুজ-পঙ্ক্তিহারাঃ। নছো বিশালপূলিনাস্থনিতম্ববিষা মনদং প্রয়াস্তি সমদাঃ প্রমদা ইবাছ।। ৩।। বোাম কচিদ্রজত-শঙ্খ-মূণাল-গৌরৈস্ত্যক্তাম্বৃভির্লঘূতয়া শতশঃ প্রয়াতঃ। সংলক্ষ্যতে প্রন-বেগ-চলৈঃ প্রোদে রাজেব চামর-বরৈরুপ্রীজ্যমানঃ॥ ৪॥ ভিন্নাঞ্চন-প্রচয়-কান্তি নভো মনোজ্ঞং বন্ধুক-পুষ্পরচিতারুণতা চ ভূমিঃ। বপ্রাশ্চ পরকলমারত-ভূমি-ভাগাঃ প্রোৎকণ্ঠয়ন্তি ন মনো ভূবি কস্থ যূনঃ। ৫।। মন্দানিলাকুলিত-চারুতরাগ্রশাখঃ পু**স্পো**দৃগম-প্রচয়-কোমল-পল্লবাগ্রঃ। মন্ত-দ্বিবেক-পরিপীত-মধু-প্রদেকশ্চিত্তং বিদারয়তি কম্ম ন কোবিদারঃ॥ ৬॥ তারাগণ-প্রবর-ভূষণমুদ্ধহস্তী মেঘাবরোধ-পরিমুক্ত-শশাঙ্ক-বক্ত্য। জ্যোৎস্না-ছকুলমমলং রজনী দধানা বৃদ্ধিং প্রয়াত্যসুদিনং প্রমদেব বালা॥ A ॥ কারশু বানন-বিঘট্টিত-বীচি-মালাঃ কাদস্য-সারসকুলাকুলতীর-দেশাঃ। কুর্ব্বস্তি হংস্বিক্ষতৈঃ পরিতো জনস্থ প্রীতিং পরাং কমলরেণুবৃহাস্তটিয়ঃ॥ ৮ ॥ **त्निः अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः विश्वः व** পত্যুর্বিয়োগ-বিষ-দিশ্ধ-শরক্ষতানাং চক্রো দহত্যতিতরাং তত্মুসঙ্গনানাম্। ৯। ফলভরানতশালি-জালামানর্ত্তরংস্তরুবরান্ কুস্থমাবনমান্। প্রোৎফুল্লপঙ্কজবনাং নলিনীং বিধুন্বন্ যুনাং মনশ্চলয়তি প্রসভং নভন্বান্॥ ১০ ॥ সোন্মাদ-হংস-মিথুনৈরূপশোভিতানি স্বচ্ছ-প্রফুল্ল-কমলোৎপল-ভৃষিতানি। মন্দ-প্রভাত--প্রনোদগত-বীচিমালাম্যুৎকণ্ঠয়ন্তি সহসা হৃদয়ং সরাংসি॥ ১১॥ নষ্ঠং ধনুর্ববলভিদো জলদোদরেষু সৌদামনী ক্ষুরতি নাছ্য বিয়ৎ-পতাকা। ধুণ্ডি পক্ষ-পবনৈর্নভো বলাকাঃ পশুন্তি নোরতমুখা গগনং ময়ুরা: ॥ ১২ ॥ নৃত্যপ্রয়োগ-রহিতাঞ্ছিখিনো বিহায় হংসাসুপৈতি মদনো মধুর-প্রশ্বীতান্। মুক্তা কদন্ত-কুটজার্জ্জ্ন-সর্জ্জ্-নীপান্ সপ্তচ্ছদামুপগতা কুস্থমোদগমঞ্জীঃ॥ ১৩॥ শেকালিকা-কুস্তুমগন্ধ-মনোহরাণি স্বস্থ-স্থিতাগুজ-কুলপ্রতিনাদিতানি পর্য্যস্ত-সংস্থিত-মৃগী-নয়নোৎপলানি প্রোৎকণ্ঠয়ন্ত্যপ্রবানি মনাংসি পুংসাম্॥ ১৪॥ মুক্তর্বিধৃশ্বংস্তৎসঙ্গমাদধিকশীতলতামুপেতঃ। কহলার-পদ্ম-কুমুদানি উৎকণ্ঠয়ত্যতিতরাং পবনঃ প্রভাতে পত্রাস্ত-লগ্ন-তৃহিনাম্ব্-বিধুয়মান: ॥ ১৫ ॥ সম্পন্নশালি-নিচয়াবৃত-ভূতলানি স্বস্থ-স্থিতপ্রচুর-গোকুল-শোভিতানি । হংসৈঃ সসারসকুলৈঃ প্রতিনাদিতানি সীমান্তরাণি জনয়ন্তি নুণাং প্রমোদম॥ ১৬॥ হংসৈর্জিতা স্থলালিতা গতিরঙ্গনানামস্ভোক্সহৈর্বিকসিতৈর্য্থ-চক্রকান্ডিঃ। নীলোৎপলৈশ্মদকলানি বিলোকিতানি জ্রবিভ্রমাশ্চ রুচিরাস্তমভিস্তরপ্রৈঃ॥ ১৭ ॥ শ্যামালতাঃ কুমুমভার-নত-প্রবালাঃ দ্রীণাং হরন্তি ধুত-ভূষণ-বাহু-কান্তিম। দস্তাবভাস-বিশদ-স্মিত-চন্দ্র-কাস্তিং কঙ্কেলি-পুষ্প-রুচিরা নবমালতী চ॥ ১৮॥ কেশান্নিভাস্ত-ঘননীল-বিকুঞ্চিভাগ্রানাপ্রয়স্তি বনিতা নবমালতীভিঃ। কর্ণেষু চ প্রবর-কাঞ্চন-কুণ্ডলেষু নীলোৎপলানি বিবিধানি নিবেশয়স্তি॥ ১৯॥ হারৈঃ সচন্দন-রসৈঃ স্তনমণ্ডলানি শ্রোণীতটং স্থবিপূলং রসনা-কলাপিঃ। পাদামুজানি কল-নৃপুর-শেখরৈশ্চ নার্য্যঃ প্রহৃষ্টমনদোহত বিভূষয়ন্তি॥ ২০॥ স্ফূট-কুমুদচিভানাং রাজ্ঞহংসঞ্জিতানাং মরকভ-মণিভাসা বারিণা ভূষিতানাম্। শ্রিয়মতিশয়রূপাং ব্যোম তোয়াশয়ানাং বহতি বিগতমেঘং চক্রতারা বকীর্ণম্॥ ২১॥ শরদি কুমুদসঙ্গাদ্বায়বো বান্ডি শীতা বিগতজ্ঞদদবৃন্দা দিখিভাগা মনোজ্ঞাঃ। বিগভকলুষমন্তঃ শ্যানপদ্ধ। ধরিত্রী বিমলকিরণচন্দ্রং ব্যোম ভারাবিচিত্রম্ ॥ ২২ ॥

বতুসংহারম্

দিবসকর-ময়ুবৈর্বোধ্যমানং প্রভাতে বর-ধুবতি-মুখাভং পঙ্কজং জ্ব্সভেহন্ত।
কুমুদমণি গভেহন্তং লীয়তে চক্রবিন্ধে হসিতমিব বধুনাং প্রোধিতেরু প্রিয়েরু॥ ২০ ॥
অসিত-নয়ন-লক্ষীং লক্ষয়িছোৎপলেরু কণিতকনককাঞ্চীং মন্তহংসম্বনেরু।
অধরক্রচিরশোভাং বন্ধুজীবে প্রিয়াণাং পথিকজন ইদানীং রোদিতি প্রান্তচিত্ত॥ ২৪ ॥
গ্রীণাং বিহায় বদনেরু শশাস্কলক্ষীং কামঞ্চ হংসবচনং মণিনূপুরেরু।
বন্ধ্ককান্তিমধরেরু মনোহরেরু কাপি প্রয়াতি স্কুভাগা শরদাগমঞ্জীঃ॥ ২৫ ॥
বিকচকমলবক্তা ফুল্লনীলোৎপলাক্ষী বিকসিতনবকাশখেতবাসো বসানা।
কুমুদক্রচিরকান্তিঃ কামিনীবোম্মদেয়ং প্রতিদিশতু শরহুশ্চেতসঃ প্রীতিমগ্র্যাম্॥ ২৬ ॥

চতুর্থঃ সর্গঃ

হেমস্তবর্ণনম্

নবপ্রবালোদগমশস্থরম্যঃ প্রফুল্ললোধ্রঃ পরিপক্ষণালিঃ। বিলীনপদ্ম: প্রপতভূ্যারো হেমস্তকাল: সমুপাগতোহয়ম্॥ ১ মনোহরৈঃ কুদ্ধুমরাগরক্তৈস্তবারকুন্দেন্দ্রনিভৈশ্চ হারৈঃ। विवासिनीनाः खन्माविनीनाः नावः कियुरु खन्मख्वानि ॥ २ । ন বাছ্যুগোষু বিলাসিনীনাং প্রয়াস্তি দক্ষং বলয়াঙ্গদানি। নিতম্ববিম্বেষু নবং ছুকূলং তম্বংশুকং পীনপয়োধরেষু॥ ৩। काकी खरेनः काकन तञ्जि कि द्वारा क्षित्र काका निष्यम्। ন নৃপুরৈহংসরুতং ভজন্তিঃ পাদাস্কাশ্যস্ককান্তিভাঞ্জি॥ ৪ কালীয়কচর্চিতানি সপত্রলেখানি মুখাসুজানি। শিরাংসি কালাগুরুধৃপিতানি কুর্ব্বস্তি নার্য্যাঃ স্থরতোৎসবায়। ৫ রতিশ্রমক্ষামবিপাণ্ড্বক্ত্রাঃ সম্প্রাপ্তহর্ষাভ্যুদয়াস্তরুণ্যঃ। হসন্তি নোকৈদিশনাগ্রভিন্নান প্রপীডামানানধরানবেকা ॥ ৬ পীনস্তনোরঃস্থলভাগশোভামাসাম্ম তৎ-পীড়ন-জাত-থেদঃ। তৃণাগ্রলগ্নৈস্তহিনঃ পতন্তিরাক্রন্দতীবোষসি শীতকালঃ॥ ৭॥ প্রভূতশালিপ্রসবৈশ্চিতানি মৃগাঙ্গনাযূথবিভূষিতানি। মনোহরক্রৌঞ্নিনাদিতানি সীমান্তরাণ্যুৎস্কয়ন্তি চেতঃ॥৮॥ প্রফুল্লনীলোৎপলশোভিতানি সোন্মাদ-কাদম্ববিভূষিতানি । প্রসন্মতোয়ানি স্থশীতলানি সরাংসি চেতাংসি হরস্তি পুংসাম্॥ ৯॥ পাকং ব্রজন্তী হিমজাতশীতৈরাধৃয়মানা সততং মরুন্তি:। প্রিয়ে প্রিয়ঙ্গু: প্রিয়বিপ্রযুক্তা বিপাণ্ডুতাং যাতি বিলাসিনীব ॥ ১০

পুস্পাসবামোদি-ফুগন্ধিবক্তো নিখাস-বাতৈ: স্থরভীকুতাক্ত:। পরস্পরাঙ্গ-বাতিষিক্ত-শায়ী শেতে জন: কামরসাম্ববিদ্ধঃ ॥ ১১ ॥ দন্তর্জ্ঞান: সত্রণ-দন্ত-চিহ্নৈ: স্তানেশ্চ পাণ্যগ্রকুতাভিলেখৈ:। **সংস্**চ্যতে निर्भग्नमनानाः त्राणियारा। नवरयोवनानाम ॥ ১২ ॥ দস্তচ্ছদং প্রিয়তমেন নিপীত-সারং দস্তাগ্রভিন্নমবক্নয় নিরীক্ষতে চ॥ ১৩॥ অন্যা প্রকাম-স্বরত-শ্রম-খিন্ন-দেহা রাত্রি-প্রজাগর-বিপাটল-নেত্র-পদ্মা। স্রস্তাংসদেশ-লুণিতাকুল-কেশ-পাশা নিদ্রাং প্রয়াতি মৃত্ব-সূর্য্যকরাভিতপ্তা॥ ১৪॥ নিশ্মাল্য-দাম পরিমুক্ত-মনোজ্ঞ-গন্ধং মূর্ম্নে হিপনীয় ঘন-নীল-শিরোরুহান্তাঃ। পীনোমত-স্তন-ভরানত-গাত্র-ষষ্ট্যঃ কুর্বস্তি কেশরচনামপরাস্তরুণাঃ॥ ১৫॥ অন্যা প্রিয়েণ পরিভুক্তমবেক্ষ্য গাত্রং হর্ষাম্বিতা বিরচিতাধরচারু-শোভা । কুর্পাসকং পরিদ্যাতি নখক্ষতাঙ্গী ব্যালম্বি-নীল-ললিতালক-কুঞ্চিতাক্ষী ॥ ১৬ ॥ অন্যাশ্চিরং সুরতকেলিপরিশ্রামেণ খেদং গতাঃ প্রশিথিলীকুতগাত্রষষ্ট্যঃ। সংহয়্যমাণপূলকোরুপয়োধরাস্তা অভ্যঞ্জনং বিদধতি প্রমদাঃ ফুশোভাঃ॥ ১৭॥ বছগুণরমণীয়ো যোষিতাং চিত্তহারী পরিণতবক্তশালিব্যাকুলগ্রামসীমা। সভতমতিমনোজ্ঞঃ ক্রেপ্টিমালাপরীতঃ প্রদিশতু হিমযুক্তঃ কাল এবঃ হুখং বঃ॥ ১৮॥

পঞ্চমঃ সূৰ্যঃ

শিশিরবর্ণনম

প্ররুদান্যংশুচরৈর্শ্মনোহরং কচিৎ স্থিতক্রেপিনিনাদরাজ্ঞিতম। প্রকামক!মং প্রমদাজনপ্রিয়ং বরোরু! কালং শিশিরাহ্বয়ং শৃণু॥ ১॥ নিরুদ্ধবাভায়নমন্দিরোদরং হুতাশনো ভাকুমতো শুরণি বাসাংস্থৰলা: সযৌবনা: প্রয়াস্তি কালেছত্র জনস্থ সেব্যতাম্॥ ২ ॥ न ठन्मनः ठट्यमत्रीिंठणैञ्जः न इन्द्रार्श्वरः भत्रिकृतिन्द्राण्यः। ন বায়ব: সাক্রভুষারশীতলা জনস্থ চিত্তং রময়ন্তি সাক্ষতম্॥ ৩॥ তুযারসঙ্ঘাতনিপাতণীতলা: শশাস্কভাভি: শিশিরীকৃতা: পুন: । বিপাঞ্**তারাগণঞ্জিকাভূষিতা জনস্থ সেব**্যা ন ভবস্তি রাত্রয়: ॥ ৪ ॥ গৃহীততামূলবিলেপনস্ৰক্ষঃ সুখাসবামোদিতবক্ত পদ্ধজা: । প্রকামকালাগুরুধুপবাসিতং বিশস্তি শয্যাগৃহমুৎত্রকা: স্ত্রিয়:॥ ৫॥ কৃতাপরাধান্ বহুশোহপি ভর্জিজান্ সবেপথূন্ সাধ্বসলুপ্তচেতসঃ। নিরীক্ষ্য ভর্ত্ত নু স্থরতাভিলাবিণঃ জ্রিয়োহপরাধান্ সমদা বিসম্মরুঃ॥ ৬॥ প্রকামকামৈয়্ বিভিঃ সনির্দ্ধরং নিশাস্থ দীর্ঘাস্বভিরামিতা ভূশম। खमस्डि मन्तः खमर्थिनराज्ञंत्रः क्रशावनार्त नवर्योवनाः क्षियः॥ १॥ মমোজ্ঞ-কুর্পাসক-পীড়িত-স্তনাঃ সরাগ-কৌশেয়ক-ভৃষিতোরসঃ। নিবেশিভাস্ত:কুস্থানৈঃ শিরোরুহৈর্বিভূষয়স্তীব হিমাগমং স্ত্রিয়ঃ॥৮॥ পরোগরে: কুকুমরাগপিছরে: স্থাপদেব্যৈন্বযৌবনোম্বভি:। বিলাসিনীভি: পরিপীড়িতোরস: স্বপস্তি শীতং পরিভূয় কামিন:॥ ৯॥ স্থান্ধি-নিখাস-বিকম্পিতোৎপলং মনোহরং কাম-রতি-প্রবোধকম। নিশাস্থ ছষ্টা: সহ কামিভি: জ্রিয়: পিবস্তি মছা: মদনীয়মুত্তমম্॥ ১০ ॥ অপগতমদরাগা বোষিদেকা প্রভাতে ক্তনিবিড়কুচাগ্রা পজুরোলিকনে। প্রিয়তমপরিজুক্তং বীক্ষমাণা স্বদেহং ব্রজ্ঞতি শয়নবাসাদ্বাসময়জনস্ত্রী ॥ ১১ ॥ শশুরুস্বরভিধৃপামোদিতং কেশপাশং গলিতকুস্মমালং তবতী কুঞ্চিতাগ্রম্। তাজতি গুরুনিতথা নিয়মধ্যাসসানা উষসি শয়নমন্ত্রা কামিনী চারুশোভা ॥ ১২ ॥ কনক-কমল-কাক্তঃ সন্ত এবাস্থুমোতঃ শ্রবণতট-নিষক্তঃ পাটলোপাস্ত-নেত্রৈঃ। উষসি বদনবিস্বৈরংস-সংসক্ত-কেশৈঃ শ্রিয় ইব গৃহমধ্যে সংস্থিতা ঘোষিতোহয় ॥ ১৩ ॥ পৃথুজ্বন-ভরার্ত্তাঃ কিঞ্চিদানত্র-মধ্যাঃ স্তনভরপরিখেদামান্দমন্দং ব্রজ্ঞ্জঃ। স্থ্রত-সময়বেশং নৈশমান্ত প্রহায় দর্ধতি দিবসযোগ্যং বেশমন্তাস্তরুণাঃ॥ ১৪ ॥ নর্থপদচিতভাগান্ বীক্ষমাণাঃ স্তনাগ্রানধর্কিসলয়াগ্রং দস্তভিন্নং স্পৃশস্ত্যঃ। অভিমতরসমেতং নন্দয়ন্তান্তরুকণাঃ সবিত্রুদ্দয়কালে ভ্ষয়ন্ত্রাননানি ॥ ১৫ ॥ প্রায়ুজ্বত্বিকারঃ স্বান্তুশালীকুর্ম্যঃ প্রবলস্বরতকেলির্জাতকন্দর্পদর্পঃ। প্রিয়জনরহিতানাং চিন্তসন্তাপহেতুঃ শিশিরসময় এব শ্রেয়সে বোহস্ত নিত্রম্॥ ১৬ ॥

षष्ठेः मर्गः

वजखवर्गनम्

প্রফুল-চুতাঙ্কুর-তীক্ষ-সায়কো দ্বিরেফ-মালা-বিলসদ্ধসূর্গুণ:। মনাংসি বেন্ধু: স্থরত-প্রসঙ্গিনাং বসস্ত-বোধঃ সমুপাগতঃ প্রিয়ে॥ ১॥ জ্ঞা: সপুষ্পা: সলিল: সপদ্ম: দ্রিয়: সকামা: পবন: সুগন্ধি:। মুখাঃ প্রদোষা দিবসাশ্চ রম্যাঃ সর্ববং প্রিয়ে! চারুতরং বসস্তে॥ ২॥ वां शिक्कानाः मिनिरम्थमानाः मामाइकानाः व्यममाकनानाम्। চূত-ক্রনাণাং কুসুনাশ্বিতানাং দদাতি সৌভাগ্যময়ং বসস্তঃ॥ ৩॥ কুস্বস্ভরাগারুণিতৈর কুলৈর্নিতম্ববিম্বানি বিলাসিনীনাম্। রক্তাংশুকৈ: কুন্ধুমরাগ-গৌরৈরলংক্রিয়ন্তে স্তন-মণ্ডলানি ॥ ৪ ॥ कर्णिषु रयागाः नवकर्णिकांतः চल्यम् नील्यस्याकम्। পুষ্পঞ্চ ফুল্লং নবমল্লিকায়াঃ প্রয়াতি কান্তিং প্রমদাজনস্ত ॥ ৫ ॥ স্তনেরু হারাঃ সিতচন্দনার্দ্রা ভুজেরু সঙ্গং বলয়াঙ্গদানি। প্রয়ান্ত্যনঙ্গাতুরমানসানাং নিতম্বিনীনাং জঘনেষু কাঞ্চঃ॥ ৬॥ সপত্রলেখেষু বিলাসিনীনাং বক্তেষু হেমামুরুহোপমেষু। রত্বাস্তরে মৌক্তিকসঙ্গরম্যঃ স্থেদোকামো বিস্তরতামুপৈতি॥ ৭॥ উচ্ছাসয়স্তাঃ শ্লথবন্ধনানি গাত্রাণি কন্দর্প-সমাকুলানি। সমীপবর্ত্তিমধুনা প্রিয়েযু সমুৎস্থকা এব ভবস্তি নার্য্যাঃ॥৮॥ ত্র্নি পাণ্ড্নি সমন্থরাণি মৃত্যু হর্জ ম্ভণতৎপরাণি। অঙ্গান্তনকঃ প্রমদাজনস্থ করোতি লাবণ্য-সমন্ত্রমাণি॥ ৯॥ নেত্রেষু লোলো মদিরালসেয়ু গণ্ডেষু পাণ্ডঃ কঠিনঃ স্তনেষু। মধ্যেষু নিমো জঘনেষু পীনঃ স্ত্রীণামনঙ্গো বছধা ছিভোইছা ॥ ১০ ॥

অঙ্গানি নিজালসবিভ্ৰমাণি বাকাানি কিঞ্চিন্মদলালসানি। জ্ঞকেপজিক্ষানি চ বীক্ষিতানি চকার কামঃ প্রমদাজনানাম্।। ১১ ।। প্রিয়ঙ্গুকালীয়ককুদ্ধুমাক্তং স্তনেষু গৌরেষু বিলাসিনীভি:। আলিপ্যতে চন্দ্ৰমঙ্গনাভি: মদালগাভিশ্ গ্ৰাভিযুক্তম্॥ ১২ ॥ বাসাংসি বিহায় তুর্ণ তন্নি লাক্ষারসরঞ্জিতানি। স্থুগন্ধিকালাগুরুধুপিতানি थएखकनः काममणानाजी.॥ ১৩॥ পুংস্কোকিলশ্চ তরসাসবেন মন্তঃ প্রিয়াং চুম্বতি রাগছষ্টঃ। কুজন দ্বিরেকোহপ্যয়মমূজন্ম: প্রিয়ং প্রিয়ায়াঃ প্রকরোতি চাটু॥ ১৪॥ তাত্র-প্রবাল-স্তবকাবনত্রাশ্চ তদ্রুমাঃ পুশ্লিত-চারু-শাখাঃ । কুৰ্বস্থি কামং প্ৰনাবধৃতাঃ প্ৰয়ুৎস্কুকং মানসমঙ্গনানাম্॥ ১৫॥ আমূলতো বিক্রমরাগতাত্রং সপল্লবাঃ পুষ্পাচয়ং দধানাঃ। কুৰ্বস্বস্তাশোকা হৃদয়ং সশোকং নিরীক্ষ্যমাণা নবযৌবনানাম্॥ ১৬॥ মন্তবিবেক-পরিচুম্বিত-চারু-পুষ্পা মন্দানিলাকুলিত-নত্র-মুতু--প্রবালাঃ। কুর্বস্তি কামিননসাং সহসোৎস্ত্রুত্বং চূতাভিরামকলিকাঃ সমবেক্ষ্যমাণাঃ॥ ১৭॥ কাস্তামুখ-ছ্যুতিজুযামপি চোল্যভানাং শোভাং পরাং কুরবক-দ্রুমমঞ্জরীণাম্। দৃষ্ট্ৰ প্ৰিয়ে ! সহজ্ঞয়স্থ ভবেন্ন কম্ম কন্দৰ্প-বাণ-পতন-ব্যথিতং হি চেডঃ॥ ১৮॥ আদীপ্ত-বহ্নিসদৃশৈক্ষকতাবধৃতৈঃ সর্বব্র কিংশুক-বনৈঃ কুস্থুমাবনফ্রৈঃ। সভো বসস্ত-সময়ে হি সমাচিতেয়ং রক্তাংশুকা নব-বধূরিব ভাতি ভূমিঃ॥ ১৯॥ কিং কিংশুকৈঃ শুক-মুখচ্ছবিভির্ন ভিন্নং কিং কর্ণিকার-কুস্থমৈর্নকৃতং মু দগ্ধম্। যৎ কোকিলঃ পুনরয়ং মধুরৈর্ব্বচোভিযু নাং মনঃ স্থবদনানিহিতং নিহস্তি॥ ২০॥ भुः एकांकिरेनः कनवराजिक्रभाख-शर्रिः कुक्रह्मिक्रमानकनानि वर्जाः । 'লজ্জান্বিভং সবিনয়ং হৃদয়ং ক্ষণেন পর্য্যাকুলং কুহগৃহেহপি কৃতং বধুন্মি॥ ২১॥ আকম্পায়ন কুমুমিতাঃ সহকারশাখা বিস্তারয়ন পরভূতস্থ বচাংসি দিক্ষু। বায়ুর্ব্বিবাতি হুদয়ানি হরমরাণাং নীহারপাতবিগমাৎ হুভগো বসস্তে॥ ২২॥

কুন্দৈঃ সৰিভ্রমবধ্-হিসভাবদাতৈরুভোভিভাস্যুপবনানি মনোহরাণি।

চিন্তং মুনেরপি হরন্তি নির্ভরাগং প্রাগেব রাগমলিনানি মনাংসি ধুনাম্।। ২০ ।

আলম্বি-হেমরসনাঃ স্তনসক্তহারাঃ কন্দর্প-দর্প-শিথিলীকৃত-গাত্রযন্তঃ।

মাসে মধৌ মধুরকোকিলভূঙ্গনাদৈর্নাহ্যো হরন্তি হৃদরং প্রসভং নরাণাম্।। ২৪ ।

নানামনোক্ত-কুস্মক্রমভূষিভান্তান্ ভৃষ্ট্যা-পুই-নিনদাকুল-সামু-দেশান্।

শৈলের-জাল-পরিণজ্জ-শিলাতলোঘান্ দৃষ্ট্যী জনঃ ক্ষিতিভূতো মুদমেতি সর্বাঃ।। ২৫ ॥

নেত্রে নিমীলরতি রোদিতি বাতি শোকং জ্ঞাণং করেণ বিরুণন্ধি বিরৌতি চোকৈঃ।

কাস্তা-বিরোগ-পরিখেদিত-চিন্ত-রন্তির্জ্ব ব্যাধাণঃ কুস্থমিতান্ সহকারবৃক্ষান্॥২৬॥

সমদমধুকরাণাং কোকিলানাঞ্চ নাদেঃ কুস্থমিতসহকারিঃ ক্রিকারিন্স্ক রম্যঃ।

ক্রিবৃভিরিব স্থতীক্রৈর্মানসং মানিনীনাং ভুদতি কুস্থম্মাসো মন্মধোজ্জনায়॥ ২৭ ॥

আত্রী মঞ্জুল-মঞ্চরী বর-শরঃ সং কিংশুকং যদ্ধসু-র্জ্যা যম্মালিকুলং কলঙ্করহিতশ্চক্রং সিতাংশুং সিতম্ । মন্তেভো মলয়ানিলঃ পরভূতো যদ্ধন্দিনো লোকজিৎ সোহয়ং বো বিতরীতরীতু বিতসুর্ভন্তং বসস্তাধিতঃ॥ ২৮॥